

## श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की ।  
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

जाके बल से गिरवर काँपे ।  
रोग-दोष जाके निकट न झाँके ॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई ।  
संतन के प्रभु सदा सहाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ॥

दे वीरा रघुनाथ पठाए ।  
लंका जारि सिया सुधि लाये ॥

लंका सो कोट समुद्र सी खाई ।  
जात पवनसुत बार न लाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ॥

लंका जारि असुर संहारे ।  
सियाराम जी के काज सँवारे ॥

लक्ष्मण मुर्छित पड़े सकारे ।  
लाये संजिवन प्राण उबारे ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ॥

पैठि पताल तोरि जमकारे ।  
अहिरावण की भुजा उखारे ॥

बाईं भुजा असुर दल मारे ।  
दाहिने भुजा संतजन तारे ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ॥

सुर-नर-मुनि जन आरती उतरें ।  
जय जय जय हनुमान उचारें ॥

कंचन थार कपूर लौ छाई ।  
आरती करत अंजना माई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ॥

जो हनुमानजी की आरती गावे ।  
बसहिं बैकुंठ परम पद पावे ॥

लंक विध्वंस किये रघुराई ।  
तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ।  
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

॥ इति संपूर्णम् ॥